P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-8* April- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पर्यटक स्थलों का कृषकों एवं कृषि की आर्थिक–प्रगति में योगदान का अध्ययन (जनपद उतरकाशी के विशेष सन्दर्भ में)

Paper Submission: 20 /04/2020, Date of Acceptance: 23/04/2020, Date of Publication: 28/04/2020

हेमलता नेगी
शोध छात्रा,
अर्थशास्त्र विभाग,
बी0 जी0 आर0 परिसर पौड़ी,
हे0 नं0 ब0 ग0 विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, उत्तराखण्ड, भारत

आर0 एस0 नेगी
प्रोफेसर,
अर्थशास्त्र विभाग,
बी0 जी0 आर0 परिसर पौड़ी,
हे0 नं0 ब0 ग0 विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

वर्तमान समय में पर्यटन अर्थव्यवस्थाओं की आर्थिक विकास का एक मुख्य स्त्रोत है। इसमें सांस्कृतिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, प्राकृतिक पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन एवं साहसिक पर्यटन मुख्य हैं। उतराखण्ड में उपर्युक्त सभी प्रकार के पर्यटन का विकास शनैः–शनैः हुआ है। धार्मिक पर्यटन का स्थान प्रमुख है। राज्य की अर्थव्यवस्था में इस पर्यटन का रोजगार एवं आय की दृष्टि से राज्य की सकल घरेलू उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान में कृषि एवं कृषि उत्पादन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है। कृषि पारम्मपरिक ढंग से की जाती है। जिसमें कृषि उत्पादन प्राकृतिक रूप या जैविक रूप में प्राप्त होता है। इन उत्पादनों की वर्तमान में काफी मांग है, जो कि कृषकों के लिए वरदान हो सकती है। कृषकों को पर्यटन मौसम में अपने उत्पादों को बाजार उपलब्ध होने के कारण कृषकों को मिल जाता है। मौसमी बाजार उपलब्ध होने के कारण कृषक उत्पाद करने के लिए प्रेरित होते है। स्थानीय स्तर पर उत्पादित विभिन्न फसलों के उत्पाद स्वास्थ्य की दृष्टि से श्रेष्ठ समझे जाते हैं। इस प्रकार की प्रगति में पर्यटन एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में आर्थिक विकास में सहायक है। पर्यटन विभिन्न रूप से देश की अर्थव्यवस्था में प्राचीन समय से ही योगदान दे रहा है। प्राचीन समय से ही भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता है। क्योंकि विभिन्न देशों से यहां विदेशी यात्रियों का भारत में भ्रमण पर आना अधिक महत्व रहा है। भारत के विभिन्न राज्य ऐसे जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्व है। जिसमें उतराखण्ड एक राज्य है। जो कि चारधाम यात्रा के साथ–साथ विभिन्न छोटे–छोटे पर्यटन स्थलों के लिए प्रसिद्व है। राज्य में विभिन्न जनपद का भी पर्यटन के लिए अलग से अपना–अपना महत्व है। जिसमें उतरकाशी जनपद प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए गढ़वाल एवं पूरे उतराखण्ड में अधिक प्रसिद्व है। जनपद के आर्थिक प्रगति में कृषि और पर्यटन का महत्वपूर्ण योगदान है। उतरकाशी में गंगोत्री, यमनोत्री, एनआईएम, हर्षिल, मनेरी झील, विश्वनाथ मदिर, डोडिताल आदि का महत्वपूर्ण योगदान है। अतः पर्यटन वर्तमान में आर्थिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। जिससे पर्यटन को बढ़ावा मिलना चाहिए। अर्थव्यस्था में रोजगार एवं राज्य सकल घरेलू उत्पादन का सृजन करने के लिए भी पर्यटन को बढ़ावा देना होगा। जो कि वर्तमान में रोजगार का एक एवं राज्य सकल घरेलू उत्पादन का अच्छा संसाधन है। मुख्य व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है।

मुख्य शब्द : पर्यटन स्थल, कृषि एवं कृषक, आर्थिक प्रगति, रोजगार।

प्रस्तावना

पर्यटन शब्द से व्यक्ति के विभिन्न आनन्द और जीवन के समय की महत्व के की अनुभूति प्राप्त होती है। पर्यटन का सम्बन्ध तीन तत्वों से होता है जिसमें समय, स्थान और मनुष्य जिससे मिलकर पर्यटन का निर्माण होता है। विभिन्न भारतीय ग्रंथों के अनुसार यहा पता चलता है कि मानव के सुख, शान्ति, विकास एवं ज्ञान के लिए पर्यटन अत्याधिक आवश्यक माने गये हैं। भारतीय सभ्यताओं में पर्यटन का महत्व प्राचीन समय से ही चला आ रहा है। भारत के ऋषि मुनियों को ही भारतीय पर्यटन में प्रथम स्थान दिया है। पर्यटन के विषय में प्राचीन ऋषियों ने भी यहा बताया कि ''पर्यटन के बिना मानव अन्धकार प्रेमी होकर रह जायेगा।'' पाश्चात्य विद्वान संत आगास्टिन ने पर्यटन के बारे में बताया ''बिना विश्व दर्शन ही अधुरा है।'' के0 के0 कामरा के अनुसार '' पर्यटन को लोगों द्वारा अपने प्रायिक या सामान्य आवास से दूर गंतब्यों के अस्थायी भ्रमण के

रूप में बताया है।'' ए0 के0 शुक्ल ने पर्यटन के बारे में बताया ''पर्यटन व्यक्तियों के बीच आपसी सम्बंध को स्पष्ट करता है। विदेशी व्यक्तियों के किसी स्थान पर ठहरने की ओर संकेत करता है। यहा ठहराव इस प्रकार का होता है कि उस स्थान पर कोई व्यक्ति अधिक समय तक स्थायी व अस्थायी क्रियाओं को करते हुए लाभप्रद न हो।''

उतराखण्ड राज्य पर्यटन स्थल के लिए प्रसिद्व है। विभिन्न प्रकार के धार्मिक स्थल राज्य में स्थित हैं, जोकि अपनी प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्व है। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में वर्ष 2017–18 में पर्यटन क्षेत्र जिसमें होटल, व्यवसाय को भी सम्मिलित करते हुए कुल योगदान लगभग 13.57 प्रतिशत है। राज्य में सभी प्रकार के पर्यटन से रोजगाार एवं आर्थिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राज्य में चार धाम यात्रा में वर्ष 2016 में कुल 1510768 घरेलू पर्यटक एवं कुल 2777 विदेशी पर्यटक आये जबकि वर्ष 2017 में यह संख्या क्रमशः 2403881 एवं 2167 रही। वर्तमान समय में अभी तक 17 लाख से अधिक पर्यटकों की आवाजाही हो चुकी है। पर्यटन भी विभिन्न प्रकार के होते है जैसे– भारतीय हस्तशिल्प पर्यटन, भारतीय चित्रकला पर्यटन, इको टुरिज्म, समुद्री–तटीय पर्यटन, भारत के धर्म और यात्रा पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, साहसिक पर्यटन, वन्य जीवन पर्यटन, तीर्थ यात्रा पर्यटन, इत्यादि पर्यटन शामिल है। जिससे विभिन्न देश की आर्थिक–सामाजिक सुधार में पर्यटन महत्वपूर्ण सिद्व होता का है। राज्य में पर्यटन वर्ष 2006–7 से 2016–17 में कुल सकल घरेलु उत्पाद में 50 प्रतिशत योगदान पर्यटन का रहा है। राज्य में पर्यटन में अपनी परिकल्पना की दर को प्राप्त करने के लिए हरित अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर है। 2006 में उतराखण्ड में 19.45 प्रतिशत पर्यटन राज्य में आये, जिनकी संख्या 2016 में बढ़कर 31.78 लाख आंकी गयी। WTTC (विश्व टूरिज्म एंड ट्रैवल कौंसिल) की रिर्पोट के अनुसार भारत का वैश्विक स्तर पर 7वीं सबसे बड़ी पर्यटन अर्थव्यवस्था के रूप में माना गया। भारतीय पर्यटन का पूर्ण आकार के आधार पर 2017–2027 के मध्य 7 प्रतिशत वृद्दि की दर का अनुमान लगाया गया है। उतराखण्ड राज्य में भी पर्यटन की विभिन्न चुनौतियां है।

तालिका 01

उतराखण्ड में वर्षवार पर्यटकों का आगमन

(तीर्थ यात्री सहित)

वर्ष	विभिन्न वर्ष में आये यात्रियों की संख्या प्रतिशत में						
2002	117.08 प्रतिशत	2007	222.60 प्रतिशत	2012	284.73 प्रतिशत	2017	347.23 प्रतिशत
2003	129.93 प्रतिशत	2008	231.77 प्रतिशत	2013	211.32 प्रतिशत	2018	
2004	139.05 प्रतिशत	2009	232.72 प्रतिशत	2014	226.30 प्रतिशत	2019	
2005	163.74 प्रतिशत	2010	311.08 प्रतिशत	2015	294.06 प्रतिशत		
2006	194.54 प्रतिशत	2011	268.08 प्रतिशत	2016	217.77 प्रतिशत		

आर्थिक सर्वेक्षण 2017–18 उतराखण्ड सरकार

तालिका 1 में उतराखण्ड राज्य में वर्ष 2002 से 2017 तक का विवरण द्वारा बताया गया है। वर्ष 2002 से 2010 तक पर्यटकों की संख्या में लगातार वृद्वि हुई है। जोकि बढ़कर 2001 में 117.08 प्रतिशत से 2010 तक 311.08 प्रतिशत हुआ है। वर्ष 2011 में यह घटकर 268.08 प्रतिशत एवं 2012 में 284.73 प्रतिशत हुआ है। वर्ष 2013 से घटते हुए 211.32 प्रतिशत से 2017 में 347.23 प्रतिशत बढ़ गया है। जोकि वर्ष 2002 से सबसे अधिक प्रगति पर वर्ष 2017 रहा है।

पर्यटक स्थल अपने आप में एक बहुत प्रसिद्व धारणा बन चुका है। पर्यटन क्षेत्र में विकास करने से सरकार को एक उच्च आय प्राप्त होती है। पर्यटन सरकार की आय का वर्तमान में मुख्य संसाधन बना हुआ है। पर्यटन सरकार का ही नहीं बल्कि पर्यटक स्थलों के क्षेत्र में निवास कर रहे लोंगों का भी आर्थिक रूप से स्त्रोत बना हुआ है। पर्यटक के विकास से स्थानीया लोगों की संस्कृति, को प्रोत्साहन कृषि को परिश्रय मिलता है। पर्यटन स्थलों के आसपास निवास कर रहे लोगों की आजीविका के साधन के रूप में लाभान्वित करता है। उतराखण्ड राज्य एक पर्यटन राज्य है। राज्य के आय का मुख्या स्त्रोत पर्यटन है। वैसे राज्य में विभिन्न पर्यटक स्थल हैं। लेकिन राज्य में मुख्य रूप से चारधाम यात्रा होती है। यह चारधाम यात्रा तीन जिलों में विशेष रूप से होती है। जिसमें रूद्रप्रयाग, चमोली एवं उतरकाशी जिले में सम्मिलित होती है। राज्य के आर्थिक विकास में पर्यटन के साथ–साथ कृषि का भी महत्वपूर्ण योगदान है। राज्य में कृषि और पर्यटन को एक ही सिक्के के दो पहेलू माना जा सकता है।

तालिका 02

विभिन्न देशों के पर्यटन का जीडीपी का योगदान

पाकिस्तान	**7.4 प्रतिशत**	**थाईलैंड**	**21.2 प्रतिशत**
भारत	9.4 प्रतिशत	मालद्वीप	76.6 प्रतिशत
नेपाल	7.8 प्रतिशत	चैन	11 प्रतिशत
श्रीलंका	11.6 प्रतिशत	मकाउ	61.3 प्रतिशत
मॉरीशस	23.8 प्रतिशत	ळांगकांग	16.7 प्रतिशत
क्यूबा	10.7 प्रतिशत		

वर्ष 2017 की वार्षिक रिर्पोट के अनुसार पर्यटन का जीडीपी में अलग–अलग देशों का अलग–अलग योगदान है। भारत की जीडीपी में पर्यटन का योगदान 9. 4 प्रतिशत है, पाकिस्तान का 7.4 प्रतिशत, क्यूबा का 10.7 प्रतिशत, मालद्वीप का 76.6 प्रतिशत, मारीशस 23.8 प्रतिशत, श्रीलंका 11.6 प्रतिशत, थाईलैंड 21.2 प्रतिशत, हांगकांग 16.7 प्रतिशत, नेपाल 7.8 प्रतिशत, चीन 11

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-8* April- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्रतिशत एवं मकाउ का 61.3 प्रतिशत है। सबसे ज्यादा जीडीपी में मालद्वीप देश आगे है। जिसका प्रतिशत 76.6 प्रतिशत है। एवं सबसे कम पाकिस्तान की जीडीपी में पर्यटन का योगदान जोकि 7.4 प्रतिशत है।

उद्देश्य

1. उतरकाशी जनपद के आर्थिक विकास में पर्यटन स्थलों का योगदान।
2. उतरकाशी जनपद के कृषकों और कृषि में पर्यटन स्थलों का योगदान।

उतरकाशी जनपद के आर्थिक विकास में पर्यटन स्थलों का योगदान

जनपद उतरकाशी टिहरी जनपद से एक नया जनपद बनाया गया। जनपद उतरकाशी एक प्रसिद्व नदी भागीरथी के तट पर बसा हुआ है। उतरकाशी धार्मिक स्थलों की दृष्टि से अधिक प्रसिद्व है, जहां पर भगवान विश्वनाथ का प्रसिद्व मंदिर है। जहां भारतीय राज्यों और विदेशी यात्री आते हैं। जिससे जनपद के आर्थिक विकास एवं जनपद के लोगों को पर्यटन से रोजगार मिल जाता है। जनपद अपने सौन्दर्य के लिए अत्याधिक प्रसिद्व एवं चारों ओर से प्राकृतिक पहाड़ों से घिरा हुआ है। जिससे जनपद में आये यात्री अधिक प्रवाहित होते है। जनपद में विभिन्न स्थान पर्यटक हैं जैसे– गंगोत्री, यमुनोत्री, विश्वनाथ मंदिर, मनेरी झील, नेहरू पर्वतारोही संस्थान शक्ति मंदिर, डोडीताल, सातताल, दायारा बुग्याल, केदारताल, नचिकेता ताल, गोमुख, सेममुखेम, आदि प्रमुख स्थल है। इन विभिन्न तीर्थ स्थलों का जनपद के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

जनपद उतरकाशी एक सिर्फ लोकप्रिया देश से ही नहीं विदेशों से भी पर्यटन स्थल ही नहीं बल्कि एक प्रसिद्व तीर्थस्थल भी है। जिनके दर्शन करने के लिए श्रर्द्वालू दूर–दूर से आते हैं। उतरकाशी जनपदमें पर्यटन का स्वरूप विविध है। जैसे प्राकृतिक सौन्दर्य, एवं हर की दून जैसे स्थ्ल ट्रैवलर्स को अपनी ओर आकर्षित करते है। जनपद में मुख्य रूप से जैसे यमनोत्री धाम, गोमुख, गंगोत्री धाम, विश्वानाथ मंदिर, डोडीताल, मनेरी झील, जोशीयाड़ा झील, (एनआईएम) नेहरू माउंट इत्यादि अपने आप में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। साथ ही गोविन्द पशु विहार, गंगोत्री राष्ट्रीय पार्क आदि जैव विविधता के लिए प्रसिद्व हैं।

गंगोत्री और यमनोत्री उत्तरकाशी

उत्तरकाशी जनपद में दो धाम पर्यटन स्थल के लिए अधिक प्रसिद्व है। जिसमें गंगोत्री और यमनोत्री धाम का महत्वपूर्ण योगदान है। उत्तरकाशी में गंगोत्री धाम के दर्शन के लिए वर्तमान समय में विभिन्न देशों से लोग दर्शनार्थ आते हैं। जनपद के आर्थिक प्रगति में दोनों धाम का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रत्येक वर्ष यात्रियों की जनसंख्या में वृद्वि हुई है। गंगोत्री ग्लेशियर से भागीरथी नदी का उद्गम हुआ है। जिससे गंगोत्री धाम प्रसिद्व है। यमनोत्री धाम में यमुना नदी का उद्गम स्थल है। दोनों ही धाम अपनी धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्वता के कारण लिए प्रसिद्व है। उत्तरकाशी जनपद का मुख्या व्याय है जो भागीरथी नदी के तट पर स्थित है। जहां यात्री आ कर प्राकृतिक सौन्दर्य का लाभ लेने हेतु की और अकर्षित हो जाते हैं। जिससे जनपद को आर्थिक रूप से संबध मिल रहा है।

जनपद उत्तरकाशी में डोडीताल एवं अपनी प्राकृतिक सौंदर्य के लिए अति प्रसिद्व है। प्रत्येक वर्ष यहां भी अधिक मात्रा में पर्यटक आते हैं। यह ताल अपनी सुन्दरता के कारण अत्यन्त प्रसिद्व है। कुछ समय पहले यहां आसपास के ही लोग यात्रा के रूप में यहां पर दर्शन करने आते थे। लेकिन अब इस क्षेत्र में पर्यटक निरंतर इस ताल को देखने के लिए आ रहें है। जिससे यह ताल भी अब एक पयर्टन स्थल के रूप में विकातित रहा है। इस ताल के कारण यहां स्थानीया लोगों की आर्थिकी वृद्वि हो रही है।

दयारा–बुग्याल उत्तरकाशी

जनपद उत्तरकाशी में दयारा–बुग्याल भी प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए विश्व प्रसिद्व हैं। जहां पर छोटी–छोटी हरी घास के मैदान है। जोकि अपनी खुबसूरती के लिए प्रसिद्व है। जनपद के इस स्थल पर भी बाहर से पर्यटक आते हैं। जोकि टेंट लगा कर यहां पर ठहरते हैं। जनपद के आर्थिक प्रगति में इस जगहा का भी अपना महत्व बढ़ रहा है। इस प्राकृतिक स्थल के स्थल पर यात्रि विश्राम के लिए अस्थायी निवास ही उपलब्ध है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-8* April- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

विश्वनाथ मंदिर उतरकाशी जनपद का सबसे प्रसिद्व मंदिर है। इस मंदिर के दर्शन करने के लिए लोग विभिन्न क्षेत्रों से लोग आते हैं। विदेशी भी आते है। जोकि जनपद की आर्थिक प्रगति में सहायक बना हुआ है।

एनआईएम जनपद उतरकाशी का एक प्रसिद्व स्थल है जोकि म्यूजियम और एडवेंचर कोर्स के लिए प्रसिद्व है। जिससे यहां बाहर के लोग घूमने एवं एडवेंचर कोर्स करने के लिए आते हैं। जिससे जनपद की आर्थिक रूप से प्रगति में इस स्थल का भी महत्व बढ़ रहा है। यहां लोग विभिन्न राज्यों और जनपदों से एडवेंचर कोर्स करने के लिए आते हैं। जिससे जनपद उतरकाशी के लोगों की आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण योगदान है।

उतरकाशी के कृषकों और कृषि में पर्यटन स्थलों का योगदान

इस अध्ययन में विशेषकर जनपद उतरकाशी के पर्यटन स्थलों का वर्णन किया गया है। जनपद की विभिन्न पर्यटकों का कृषि पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। जनपद उतरकाशी उतराखण्ड राज्य का एक जिला है। जोकि राज्य में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा है। जनपद उतरकाशी में पर्यटन स्थल में गंगोत्री, यमनोत्री मुख्य पर्यटन स्थल है। इनके साथ–साथ जिले में छोटे–छोटे विभिन्न मन्दिर है। जो जिले के लोगों की आय में मुख्य योगदान होते है। जनपद उतरकाशी जितना पर्यटन एवं कृषि क्षेत्र के लिए प्रसिद्व है, उतना ही अपने सौनदर्य के लिए भी प्रसिद्व है। जिससे यात्री आकर्षित होकर जनपद उतरकाशी आने के लिए ज्यादा तत्पर रहते हैं। जनपद उतरकाशी में विभिन्न क्षेत्रों प्रदेशों से यात्री आते हैं। जिससे जपनद के कृषक परिवार अपने कृषि कार्यों के साथ–साथ यात्रा के समय होटल एवं अन्य कार्यों में भी अपना योगदान देते हैं। जिससे जनपद के कृषक परिवार कृषि के साथ–साथ अन्य आय के संसाधन में भी अपना योगदान देते हैं। तथा इस समय में उत्पादित उपज को भी पर्यटकों को आसानी से बेचते हैं।जनपद में भटवाड़ी ब्लाक में कृषि के साथ कृषक परिवार होटल एवं अन्य गतिविधियों में भी संलगन हैं। क्योंकि कुछ कृषक परिवार ऐसे हैं जिनके पास कम जोत उपलब्ध है। जिसके कारण परिवार के कुछ लोग कृषि कार्य करते हैं और कुछ पास के होटलों में कार्य करते है। जिससे उनकी आय में वृद्वि होती है, एवं कृषक परिवार कृषि के साथ–साथ रोजगार के अन्य साधन भी ढूंढते है। यह गतिविधि जनपद के कृषकों के लिए महत्वपूर्ण सिद्व होती है। जनपद के भटवाड़ी ब्लाक में बहुत सारी पुरानी औषधीय होती है। जोकि दवाई के रूप में कार्य करती है। यह औषधीय वर्तमान में अधिक मात्रा में उपयोग में लायी जा रही है। जिससे यहां बाहर से आये यात्री भी खरीदते है। जिससे कृषकों को अच्छी आय प्राप्त होती है। कृषक परिवार स्थानीय स्तर पर पर्यटकों को ही इन औषधियों को बेचते हैं। जहां पर यात्रीयों पर्यटकों का आना–जाना होता है। बाहर से आये लोग इन उत्पादों को अधिक मात्रा में खरीदते हैं। जिन से कृषकों को उचित आय प्राप्त होती है। जनपद का भटवाड़ी ब्लाक में हर्षिल एक खुबसूरत स्थ्ल है। जोकि मुख्य रूप से सेब और राजमा के लिए

प्रसिद्व है। हर्षिल की राजमा की माँग स्थानीय एवं प्रदेश स्तर पर अधिक है। गंगोत्री धाम में जो भी यात्री जातें है। वे हर्षिल जैसी सुन्दर जगहा से होते हुए जाते है। पर्यटन से यहां के कृषकों को लाभ मिलता है। जिससे कृषक अपनी पैदावार को स्थानीय पर ही बेचते हैं जिससे उनका मुख्य बाजार तक ले जाने का किराया भी बच जाता है, एवं उनको उत्पादन का सही मूल्य भी मिल जाता है। कृषकों का जब कृषि कार्य पूरा हो जाता है। तो यहां के स्थानीय लोग आय सृजन का साधन पर्यटन बन जाता है। स्थानीया लोग पर्यटकों को विभिन्न सुविधायें उपलब्ध कराते हैं। जनपद में मक्का फसल का भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। मक्का की फसल बरसात के मौसम तक तैयार हो जाती है। जिससे बाजार में लोग इन मक्कीयों की अधिक मात्रा में खीद करते हैं। कृषको को इस सीजन में भी अच्छी आय प्राप्त होती है। कृषकों को भी पर्यटको के आने से लाभ प्राप्त होता है। जनपद के गांवों में बरसात के मौसम में खीरे, फल और सब्जीयां भी अधिक मात्रा में होती है। फलों की मांग बाहर से आये पर्यटक भी अच्छी मात्रा में करते हैं। जनपद में विभिन्न

ग्रामीण स्थलों से फल अधिक मात्रा में बाजार में आते है। जिससे बाहर से आये लोग स्थानिया फलों और विभिन्न कृषि उत्पादों से प्रभावित होते हैं। जनपद में कुछ जगहों पर कुछ खेती ऐसी भी थी जिनमें उपज कम हो रहा थी। जनपद में कृषि की इस समस्या को देखने के बाद इस समस्या का समाधान भी कराया जा रहा है। जनपद में विभिन्न समूह के माध्यम से इन कृषि भूमियों में फूलों की खेती करायी जा रही है। जिससे कृषकों की आय के संसाधनों में वृद्धि हो रही है। फूलों की मांग जनपद में ज्यादा मात्रा में की जाती है। क्योंकि यात्री भी मन्दिरों में जाने के लिए फूलों की मांग करते हैं।

31 मार्च 2017 की स्थिति के अनुसार जनपद मे ंपर्यटन		
क्र0 सं0	पर्यटन सुविधायें	संख्या में
1	मुख्य पर्यटन स्थल	30
2	पर्यटन आवास	25
3	रैन बसेरा	5
4	होटलों तथा पेइगेस्ट हाउसों की संख्या	418
5	धर्मषालाओं की संख्या 31–03–2017 तक	15
6	पर्यटकों की कुल संख्या	441345
7	भारतीय पर्यटक	439670
8	विदेशी पर्यटक	1675

तालिका 03

1 मार्च 2017 की स्थिति के अनुसार जनपद मे ंपर्यटन

संख्यिकीय पत्रिका जनपद उतरकाशी वर्ष 2017

जनपद उतरकाशी की सांख्यिकीय रिर्पोट 2017 के अनुसार जनपद में पर्यटन सुविधाओं में मुख्य पर्यटन स्थल 30 है, पर्यटन आवास 25, रैन बसेरा 5, होटलों तथा पेइगेस्ट हाउसों की संख्या 418, धर्मषालाओं की संख्या 31–03–2017 तक 15, पर्यटको की कुल संख्या 441345, भारतीय पर्यटक 439670, एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या 1675 है।

सुयश यादव (2019) में यह अध्ययन किया कि ग्रामीण पर्यटन में कृषितर गतिविधियों का महत्वपूर्ण घटक के रूप में बताया कि पूरे देश के लिए वृद्वि का टिकाव मॉडल चाहिए तो ग्रामीण भारत की आर्थिक स्थिति सुधार लाना पड़ेगा। ग्रामीण सम ुदायों के अनुभव करने में शहरी पर्यटन के संपूर्ण ग्रामीण पर्यटन के संसाधन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। इस दिशा में उतरकाशी जनपद कि कृषि का पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान है।

जनपद उतरकाशी में लाल चावल भी अत्याधिक प्रसिद्व है। जिनकी मांग राष्टीय एवं अंतराष्टीय स्तर पर अधिक है। उतरकाशी के पुरोला ब्लाक में लाल चावल की परम्परागत खेती की जाती है। पर्यटक जो भी यमनोत्री धाम के लिए प्रवेश करता है। वह पुरोला, बड़कोट होते हुए जाता है। यह दोनों ब्लाक अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए अधिक प्रसिद्व है। क्योंकि यहां पर कृषि भी अधिक मात्रा में की जाती है। टमाटर भी यहां अधिक मात्रा में उगाया जाता है। जो कि लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत बना हुआ है।

समंक संकलन

प्रस्तावित अध्ययन की विस्तृत योजना बनाने के उपरान्त अध्ययन को स्पष्ट और वैज्ञानिक बनाने के लिए द्वितीयक समंकों और शोधार्थी ने विभिन्न तीर्थ स्थलों के द्वारा एवं जनपद के चर्चित पर्यटन स्थलों पर जा कर शोधार्थी द्वारा जनपद की कृषि, कृषकों एवं पर्यटको स्थलों का संकलन किया गया है। जोकि प्राथमिक और द्वितीयक संकलन में है।

द्वितीयक संकलन

द्वितीयक समकों का संकलन पुस्तकों, शोध पत्र, द्वारा किया गया। पुस्तकालय, समाचार पत्र विभिन्न विभागीय वार्षिक रिर्पोटों, सन्दर्भ ग्रथों तथा जनगणना रिपोर्टो के प्रकाशनो, वेवसाइडों आदि के आधार पर किया गया है।

निष्कर्ष

पर्यटन का वर्तमान समय में उतराखण्ड की अर्थव्यवस्था में महत्वपर्ण योगदान है। आर्थिक सर्वेक्षण रिर्पोट से पता चला है कि राज्य में विभिन्न पर्यटन की सहभागिता बढ़ रही है। राज्य के जनपद उतरकाशी में पर्यटन का महत्व अधिक मात्रा में बढ़ रहा है। उतरकाशी में गंगोत्री, यमनोत्री, हर्षिल, डोडिताल, विश्वनाथ मंदिर, एवं एनआईएम, भागीरथी नदी में जल क्रीड़ा खेल आदि का जनपद की आर्थिक प्रगति में अत्याधिक योगदान है। जनपद के कुछ मुख्य स्थान जैसे हर्षिल है जोकि कृषि एवं कृषकों की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे है क्योंकि यहां पर सेब एवं राजमा अधिक मात्रा में होती है जिससे यहा एक पर्यटन स्थल विकसित हो चुका है। बाहर के लोग यहां के सेब और राजमा की अधिक मात्रा में खरीद करते हैं। अतः पर्यटन का जनपद उतरकाशी एवं कृषको के सामाजिक–आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। पर्यटन स्थल का कृषि में भी सहयोग मिल रहा है। यहां के उत्पाद बाहर के लोगों में अहम पहिचान बना चुकी है। पर्यटन का जनपद की कृषि में महत्वपूर्ण योगदान है। उतरकाशी जनपद में हिमाचल प्रदेश के पालमपुर इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालायन बायोरसार्स टेक्नोलॉजी के समर्थन से जिले के सुक्की एवं झाला गांव में केसर खेती पर कार्य किया जा रहा है। जनपद में बड़ी

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-8* April- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मात्रा में यात्री आते है, जिससे कृषकों को उत्पादन बेचने के लिए बाजार की अधिक मांग उपलब्ध हो।

सुझाव

1. उतराखण्ड राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पर्यटन स्थल का विकास करना होगा।
2. राज्य के बजट में पर्यटन के लिए अधिक मात्रा में आर्थिक सहायता सरकार द्वारा दी जानी चाहिए।
3. वर्तमान में पर्यटन का अर्थव्यवस्था में योगदान बढ़ रहा है। अतः सरकार को विभिन्न कार्यक्रम के तहत पर्यटन को अधिक आकर्षित बनाना होगा।
4. सड़क यातायात एवं हवाई सेवाओं में वृद्वि करनी होगी।
5. उतराखण्ड राज्य में नये पर्यटक स्थलों की सम्भावना को तलाशना होगा।
6. राज्य के जनवद उतरकाशी में पर्यटन का वर्तमान में अधिक सहभागिता है, जिससे राज्य की अर्थव्यवस्था में अधिक कल्याणकारी सिद्व हो सकता है।
7. जनपद के पर्यटन को और विकसित करने के लिए सरकार को जनपद के पर्यटनों को अधिक आकर्षित बनाने में सहायता देनी चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. *आर्थिक सर्वेक्षण 2017–18 उतराखण्ड सरकार पृ0. सं0–162, 165।*
2. *यादव सुयश, जुलाई 2019, ग्रामीण पर्यटन कृषितर गतिविधियों का महत्वपूर्ण घटक ।*
3. *न्यूज पेपर अमर उजाला 19 अगस्त 2019।*
4. *उतराखण्ड पयर्टन पुस्तक ।*
5. *संख्यिकीय पत्रिका जनपद उतरकाशी वर्ष 2017।*
6. *उतराखण्ड पर्यटन नीति 2018। पृ0 सं0– 3,4,6,7।*
7. *https://hi.m.wikipedia.org*
8. *shodhganga.inflibnet.ac.in*
9. *shodhganga.inflibnet.ac.in p.n- 26] 27]28A*
10. *https://m.timesofindia.com> dehradune*